19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - अब घर जाना है इसलिए देही-अभिमानी बनो, एक बाप को याद करो तो अन्त मति सो गति हो जायेगी"

Ho gai he sham chalo
lot chale ghar
ho gai he sham chalo
lot chale ghar
pyara pita bulata
pyara pita bulata
pura huva safar
ho gai he sham chalo
lot chale ghar

ant kaal jo lachhmee simrai aisee chintaa meh jay marai

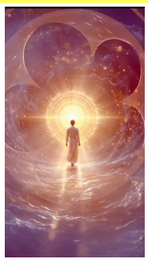

gUjrI Bgq iqRlocn jI] (526-5)	goojree bhagat trilochan jee.	Goojree bhagat trilochan jee
AMiq kwil jo lCmI ismrY AYsI icMqw mih jy mrY]	ant kaal jo lachhmee simrai aisee chintaa meh jay marai.	At the very last moment, one who thinks of wealth, and dies in such thoughts,
srp join vil vil AauqrY]1]	sarap jon val val a-utarai. ||1||	shall be reincarnated over and over again, in the form of serpents. ||1||
ArI bweI goibd nwmu miq bIsrY] rhwau]	aree baa-ee gobid naam mat beesrai. rahaa-o.	O sister, do not forget the Name of the Lord of the Universe. ||Pause||
AMiq kwil jo iesqRI ismrY AYsI icMqw mih jy mrY]	ant kaal jo istaree simrai aisee chintaa meh jay marai.	At the very last moment, he who thinks of women, and dies in such thoughts,
bysvw join vil vil AauqrY]2]	baysvaa jon val val a-utarai. ||2||	shall be reincarnated over and over again as a prostitute. ||2||
AMiq kwil jo lVky ismrY AYsI icMqw mih jy mrY]	ant kaal jo larhikay simrai aisee chintaa meh jay marai.	At the very last moment, one who thinks of his children, and dies in such thoughts,
sUkr join vil vil AauqrY]3]	sookar jon val val a-utarai. ||3||	shall be reincarnated over and over again as a pig. ||3||
AMiq kwil jo mMdr ismrY AYsI icMqw mih jy mrY]	ant kaal jo mandar simrai aisee chintaa meh jay marai.	At the very last moment, one who thinks of mansions, and dies in such thoughts,
pRyq join vil vil AauqrY]4]	parayt jon val val a-utarai. ||4||	shall be reincarnated over and over again as a goblin. ||4||
AMiq kwil nwrwiexu ismrY AYsI icMqw mih jy mrY]	ant kaal naaraa-in simrai aisee chintaa meh jay marai.	At the very last moment, one who thinks of the Lord, and dies in such thoughts,
bdiq iqlocnu qy nr mukqw pIqMbru vw ky ird bsY]5]2]	badat tilochan tay nar muktaa peetambar vaa kay ridai basai. ||5||2||	says Trilochan, that man shall be liberated; the Lord shall abide in his heart. ||5||2||

प्रश्नः- वण्डरफुल बाप ने तुम्हें कौन सा एक वण्डरफुल राज़ सुनाया है?

उत्तरः- बाबा कहते - बच्चे, यह अनादि अविनाशी ड्रामा बना हुआ है, इसमें हर एक का पार्ट नूंधा हुआ है। कुछ भी होता है नथिंग न्यु। बाप कहते हैं बच्चे इसमें मेरी भी कोई बड़ाई नहीं, मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ। बाप यह वण्डरफुल राज़ सुनाकर जैसे अपने पार्ट को भी महत्व नहीं देते हैं।

गीतः-आखिर वह दिन आया आज..... Click

How humble my baba is...!

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ।

ओम् शान्ति। मीठे-मीठे रूहानी बच्चे यह गीत गा रहे हैं। बच्चे समझते हैं कि कल्प बाद फिर से

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

हाँ मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

हमको धनवान, हेल्दी और वेल्दी बनाने, पवित्रता, सुख, शान्ति का वर्सा देने बाप आते हैं। ब्राह्मण लोग भी आशीर्वाद देते हैं ना कि आयुश्वान भव, धनवान भव, पुत्रवान भव। तुम बच्चों को तो वर्सा मिल रहा है, आशीर्वाद की कोई बात नहीं है। बच्चे पढ़ रहे हैं। जानते हैं 5 हज़ार वर्ष पहले भी हमको बाप ने आकर मनुष्य से देवता, नर से नारायण बनने की शिक्षा दी थी। बच्चे जो पढ़ते हैं, वह जानते हैं हम क्या पढ़ रहे हैं। पढ़ाने वाला कौन है? उनमें भी नम्बरवार पुरुषार्थ अनुसार जानते हैं। यह तो कहेंगे ही कि हम बच्चों को मालूम है - यह राजधानी स्थापन हो रही है वा डीटी किंगडम स्थापन हो रही है। आदि सनातन देवी-देवता धर्म की स्थापना हो रही है। पहले शूद्र थे फिर ब्राह्मण बने फिर देवता बनना है। दुनिया में किसी को यह पता नहीं है कि अभी हम शूद्र वर्ण के हैं। तुम बच्चे समझते हो यह तो सत्य बात है। बाप सत्य बताकर, सचखण्ड की स्थापना कर रहे हैं। सतयुग में झूठ, पाप आदि कुछ भी नहीं होता। कलियुग में ही अजामिल, पाप आत्मायें होती हैं। यह समय

मनुष्याणां सहस्त्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये।
यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥
हजारों मनुष्योंमें कोई एक मेरी प्राप्तिके लिये यत्न करता है और उन यत्न करनेवाले योगियोंमें भी कोई एक मेरे परायण होकर मुझको तत्त्वसे अर्थात् यथार्थरूपसे जानता है॥ ३ ॥ Adhyay 7

How lucky and Great we are...!

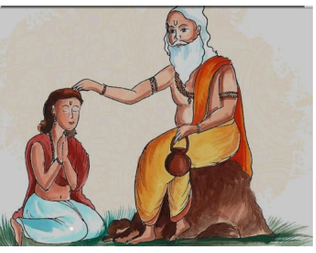

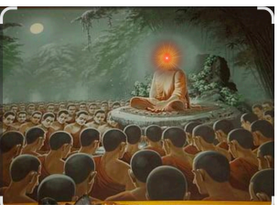

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

We can see Now...

19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

बिल्कुल रौरव नर्क का ही है। दिन-प्रतिदिन रौरव नर्क दिखाई पड़ेगा। मनुष्य ऐसा-ऐसा कर्तव्य करते रहेंगे जो समझेंगे बिल्कुल ही तमोप्रधान दुनिया बनती जा रही है। इसमें भी काम महाशत्रु है। कोई मुश्किल पवित्र शुद्ध रह सकता है। आगे जंगम (फकीर) लोग कहते थे - ऐसा कलियुग आयेगा जो 12-13 वर्ष की कुमारियाँ बच्चा पैदा करेंगी। अब वह समय है। कुमार-कुमारियाँ आदि सब गन्द करते रहते हैं। जब बिल्कुल ही तमोप्रधान बन जाते हैं तब बाप कहते हैं मैं आता हूँ, मेरा भी ड्रामा में पार्ट है। मैं भी ड्रामा के बंधन में बंधा हुआ हूँ। तुम बच्चों के लिए कोई नई बात नहीं है। बाप समझाते ही ऐसे हैं। चक्र लगाया, नाटक पूरा होता है। अब बाप को याद करो तो तुम सतोप्रधान बन, सतो प्रधान दुनिया के मालिक बन जायेंगे। कितना साधारण रीति समझाते हैं। बाप कोई अपने पार्ट को इतना महत्व नहीं देते हैं। यह तो मेरा पार्ट है, नई बात नहीं। हर 5 हज़ार वर्ष बाद मुझे आना पड़ता है। ड्रामा में मैं बंधायमान हूँ। आकर तुम बच्चों को बहुत सहज याद की यात्रा बताता हूँ।

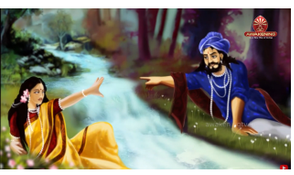

कितना मीठा, कितना प्यारा
शिव भोला भगवान...
हमने देखा , हमने पाया
शिव भोला भगवान...

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

अंति कालि जो लछमी सिमरै, ऐसी चिंता महि जे मरै।
सरप जोनि वलि वलि अउतरै ।।

अरी बाई गोविंद नामू मति बीसरै।।रहाउ।।

अंति कालि जो इसत्री सिमरै, ऐसी चिंता महि जे मरै।
बेसवा जोनि वलि वलि अउतरै।।

अंति कालि जो लडिके सिमरै, ऐसी चिंता महि जे मरै।
सूकर जोनि वलि वलि अउतरै।।

अंति कालि जो मंदर सिमरै, ऐसी चिंता महि जे मरै।
प्रेत जोनि वलि वलि अउतरै।।

अंति कालि वाराहण सिमरै, ऐसी चिंता महि जे मरै।
वदसि त्रिलोचनु ते नर मुकता, पीतंबरु बाके रिदै धसै।।

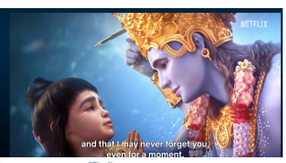

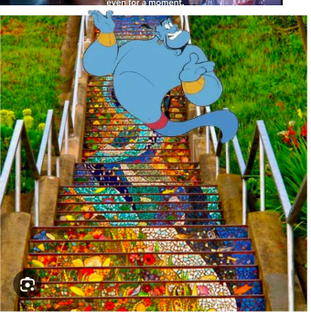

अन्त मति सो गति... वह इस समय के लिए ही कहा गया है। यह अन्तकाल है ना। बाप युक्ति बताते हैं - मामेकम् याद करो तो सतोप्रधान बन जायेंगे। बच्चे भी समझते हैं हम नई दुनिया के मालिक बनेंगे। बाप घड़ी-घड़ी कहते हैं नथिंग न्यु। एक जिन्न की कहानी सुनाते हैं ना - उसने कहा काम दो, तो कहा सीढ़ी उतरो और चढ़ो। बाप भी कहते हैं यह खेल भी उतरने और चढ़ने का है। पतित से पावन, पावन से पतित बनना है। यह कोई डिफीकल्ट बात नहीं है। है बहुत सहज, परन्तु युद्ध कौन सी है, यह न समझने के कारण शास्त्रों में लड़ाई की बात लिख दी है। वास्तव में माया रावण पर जीत पाना तो बहुत बड़ी लड़ाई है। बच्चे देखते हैं हम घड़ी-घड़ी बाप को याद करते हैं, फिर याद टूट जाती है। माया दीवा बुझा देती है। इस पर गुलबकावली की भी कहानी है। बच्चे जीत पाते हैं। बहुत अच्छे चलते हैं फिर माया आकर दीवा बुझा देती है। बच्चे भी कहते हैं बाबा माया के तूफान तो बहुत आते हैं। तूफान भी अनेक प्रकार के बच्चों के पास आते हैं। कभी-कभी तो ऐसा

समझा?

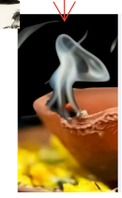

Refer Pg- 16

19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तूफान ज़ोर से आता है जो 8-10 वर्ष के पुराने अच्छे-अच्छे झाड़ भी गिर पड़ते हैं। बच्चे जानते हैं, वर्णन भी करते हैं। अच्छे-अच्छे माला के दाने थे। आज है ही नहीं। यह भी मिसाल है, गज़ को ग्राह ने खाया। यह है माया का तूफान।

बाप कहते हैं इन 5 विकारों से सम्भाल रखते रहो। याद में रहेंगे तो मजबूत हो जायेंगे। देही-अभिमानी बनो। यह शिक्षा बाप की एक ही बार मिलती है। ऐसा कभी और कोई कहेंगे नहीं कि तुम आत्म-अभिमानी बनो। सतयुग में भी ऐसा नहीं कहेंगे। नाम, रूप, देश, काल सब याद रहता ही है। इस समय तुमको समझाता हूँ - अब वापिस घर जाना है। तुम पहले सतोप्रधान थे, सतो-रजो-तमो में तुमने पूरे 84 जन्म लिए हैं। उसमें भी नम्बरवन यह (ब्रह्मा) है। औरों के 83 जन्म भी हो सकते हैं इनके लिए पूरे 84 जन्म हैं। यह पहले-पहले श्री नारायण थे। इनके लिए कहते गोया सबके लिए

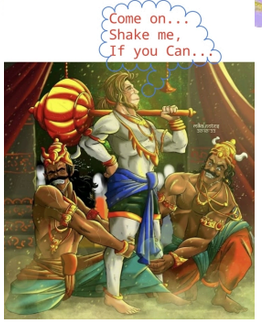

याद करो...

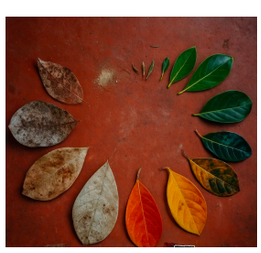

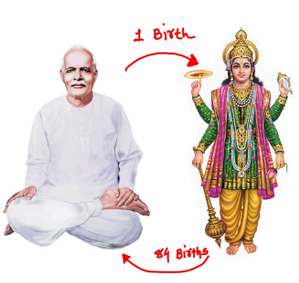

समझ जाते, बहुत जन्मों के अन्त में ज्ञान लेकर फिर वह नारायण बनते हैं। झाड़ में भी दिखाया है ना - यहाँ श्री नारायण और पिछाड़ी में ब्रह्मा खड़ा है। नीचे राजयोग सीख रहे हैं। प्रजापिता को कभी परमपिता नहीं कहेंगे। परमपिता एक को कहा जाता है। प्रजापिता फिर इनको कहा जाता। यह देहधारी है, वह विदेही, विचित्र है। लौकिक बाप को पिता कहेंगे, इनको प्रजापिता कहेंगे। वह परमपिता तो परमधाम में रहते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा परमधाम में नहीं कहेंगे। वह तो यहाँ साकारी दुनिया में हो गया। सूक्ष्मवतन में भी नहीं है। प्रजा तो है स्थूलवतन में। प्रजापिता को भगवान नहीं कहा जाता है। भगवान का कोई शरीर का नाम नहीं। मनुष्य तन जिस पर नाम पड़ते हैं, उनसे वह न्यारा है। आत्मायें वहाँ रहती हैं तो स्थूल नाम-रूप से न्यारी हैं। परन्तु आत्मा तो है ना। साधू-सन्त आदि सिर्फ घरबार छोड़ते हैं, बाकी दुनिया के विकारों के अनुभवी तो हैं ना। छोटे बच्चे को कुछ भी पता नहीं रहता है इसलिए उनको महात्मा कहा जाता है। 5 विकारों का उनको पता ही नहीं रहता

आदम को खुदा मत कहो, आदम खुदा नहीं।
लेकिन खुदा के नूर से आदम जुदा नहीं।

इसलिए छोटे बच्चे को पवित्र कहा जाता है। इस समय तो कोई पवित्र आत्मा हो नहीं सकती। छोटे से बड़ा होगा फिर भी पतित तो कहेंगे ना। बाप समझाते हैं सबका अलग-अलग पार्ट इस ड्रामा में नूंधा है। इस चक्र में कितने शरीर लेते हैं, कितने कर्म करते हैं, जो सब फिर रिपीट होना है। पहले-पहले आत्मा को पहचानना है। इतनी छोटी आत्मा में 84 जन्मों का अविनाशी पार्ट भरा हुआ है। यही है सबसे वण्डरफुल बात। आत्मा भी अविनाशी है। ड्रामा भी अविनाशी है, बना-बनाया है। ऐसे नहीं कहेंगे कब से शुरू हुआ। कुदरत कहते हैं ना। आत्मा कैसी है, यह ड्रामा कैसे बना हुआ है, इसमें कोई कुछ भी कर नहीं सकता। जैसे समुद्र अथवा आकाश का अन्त नहीं निकाल सकते। यह अविनाशी ड्रामा है। कितना वण्डर लगता है। जैसे बाबा वण्डरफुल वैसे ज्ञान भी बड़ा वण्डरफुल है। कभी कोई बता न सके। इतने सब एक्टर्स अपना-अपना पार्ट बजाते ही आते हैं। नाटक कब बना, यह कोई प्रश्न उठा नहीं सकता। बहुत कहते हैं भगवान को क्या पड़ी थी जो दु:ख सुख की दुनिया

अविनाशी

Both

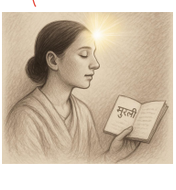

वण्डरफुल

अलिफ लैला

हर शब नई कहानी
दिलचस्प है बयानी
सदियाँ गुज़र गयी है
लेकिन न हो पुरानी

बाबा कहते है कि ये ड्रामा नित्य नया है तो पुराने ते पुराना भी है।

बैठ बनाई। अरे यह तो अनादि है। प्रलय आदि होती नहीं। बनी-बनाई है, ऐसे थोड़ेही कह सकते यह क्यों बनाई! आत्मा का ज्ञान भी बाप तुमको तब सुनाते हैं जब समझदार बनते हो। तो तुम दिन -प्रतिदिन उन्नति को पाते रहते हो। पहले-पहले तो बाबा बहुत थोड़ा-थोड़ा सुनाता था। वण्डरफुल बातें थी फिर भी कशिश तो थी ना। उसने खींचा।

भट्ठी की भी कशिश थी। शास्त्रों में फिर दिखाया है कृष्ण को कंसपुरी से निकाल ले गये। अब तुम जानते हो कंस आदि तो वहाँ होते ही नहीं। गीता, भागवत, महाभारत यह सब कनेक्शन रखते हैं, है तो कुछ भी नहीं। समझते हैं यह दशहरा आदि तो परम्परा से चला आता है। रावण क्या चीज़ है, यह भी कोई जानते नहीं। जो भी देवी-देवता थे वह नीचे उतरते-उतरते पतित बन गये हैं। रड़ियाँ भी वह मारते हैं जो जास्ती पतित बने हैं इसलिए पुकारते भी हैं हे पतित-पावन। यह सब बातें बाप ही बैठ समझाते हैं। सृष्टि चक्र के आदि-मध्य-अन्त को और कोई नहीं जानते। तुम जानने से चक्रवर्ती राजा बन जाते हो। त्रिमूर्ति में लिखा हुआ है - यह

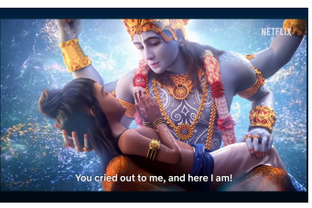

But we know, How Lucky & Great we are..!

तुम्हारा ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार है। ब्रह्मा द्वारा स्थापना, शंकर द्वारा विनाश, विष्णु द्वारा पालना..... विनाश भी जरूर होना है। नई दुनिया में बहुत थोड़े होते हैं। अभी तो अनेक धर्म हैं। समझते हैं एक आदि सनातन देवी-देवता धर्म है नहीं। फिर जरूर वह एक धर्म चाहिए, महाभारत भी गीता से सम्बन्ध रखती है। यह चक्र फिरता रहता है। एक सेकेण्ड भी बन्द नहीं हो सकता। कोई नई बात नहीं है, बहुत बारी राजाई ली है, जिसका पेट भरा हुआ होता है, वह गम्भीर रहते हैं। अन्दर में समझते हो हमने कितना बार राजाई ली थी, कल की ही बात है। कल ही देवी-देवता थे फिर चक्र लगाए आज हम पतित बने हैं फिर हम योग-बल से विश्व की बादशाही लेते हैं। बाप कहते हैं कल्प-कल्प तुम ही बादशाही लेते हो। ज़रा भी फर्क नहीं पड़ सकता। राजाई में कोई कम, कोई ऊंच बनेंगे। यह पुरुषार्थ से ही होता है।

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

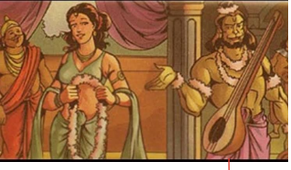

19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम जानते हो पहले हम बन्दर से भी बदतर थे। अब बाप मन्दिर लायक बना रहे हैं। जो अच्छे-अच्छे बच्चे हैं उनकी आत्मा रियलाइज करती है, बरोबर हम तो कोई काम के नहीं थे। अभी हम वर्थ पाउण्ड बन रहे हैं। कल्प-कल्प बाप हमको पेनी से पाउण्ड बनाते हैं। कल्प पहले वाले ही इन बातों को अच्छी रीति समझेंगे। तुम भी प्रदर्शनी आदि करते हो, नथिंग न्यु। इन द्वारा ही तुम अमरपुरी की स्थापना कर रहे हो। भक्ति मार्ग में देवियों आदि के कितने मंदिर हैं। यह सब है पुजारीपने की सामग्री। पूज्यपने की सामग्री कुछ भी नहीं है। बाप कहते हैं दिन-प्रतिदिन तुमको गुह्य प्वॉइंट्स समझाते रहते हैं। आगे की ढेर प्वॉइंट्स तुम्हारे पास रखी हैं। वह अभी क्या करेंगे। ऐसे ही पड़ी रहती हैं। प्रेजन्ट तो बापदादा नई-नई प्वाइंट समझाते रहते हैं। आत्मा इतनी छोटी सी बिंदी है, उनमें सारा पार्ट भरा हुआ है। यह प्वाइंट कोई आगे वाली कापियों में थोड़ेही होंगी। फिर पुरानी प्वाइंट्स को तुम क्या करेंगे। पिछाड़ी की रिजल्ट ही काम आती है। बाप कहते हैं कल्प पहले भी

Thank you so much मेरे मीठे बाबा...

असित-गिरि-समं स्यात् कज्जलं सिन्धु-पात्रे,
सुर-तरुवर-शाखा लेखनी पत्रमुर्वी।
लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्वकालं,
तदपि तव गुणानामीश पारं न याति।।

"हे शिव, यदि नीले पर्वत को समुद्र में मिला कर स्याही तैयार की जाए, देवताओं के उद्यान के वृक्ष की शाखाओं को लेखनी बनाया जाए और पृथ्वीको कागद बनाकर भगवती शारदा देवी अर्थात सरस्वती देवी अनंतकाल तक लिखती रहें तब भी हे प्रभो! आपके गुणों का संपूर्ण व्याख्यान संभव नहीं होगा।"

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

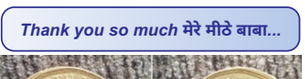

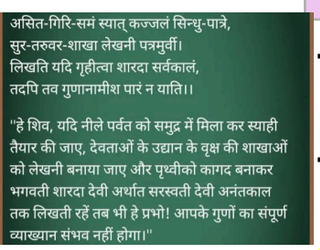

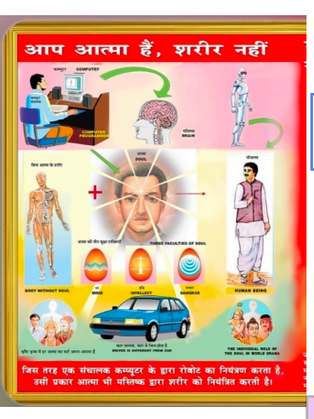

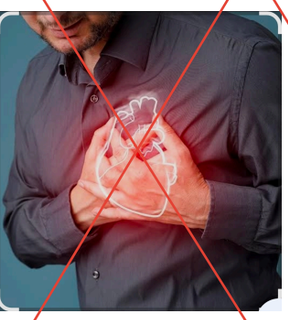

m.m.m....imp.

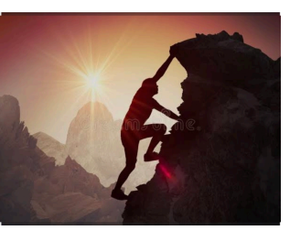

तुमको ऐसे ही सुनाया था। नम्बरवार पढ़ते रहते हैं। कोई सब्जेक्ट में नीचे ऊपर होते रहते हैं। व्यापार में भी ग्रहचारी बैठती है, इसमें हार्टफेल नहीं होना होता है। फिर उठकर पुरुषार्थ किया जाता है। मनुष्य देवाला निकालते हैं फिर धन्धा आदि कर बहुत धनवान बन जाते हैं। यहाँ भी कोई विकार में गिर पड़ते हैं फिर भी बाप कहेंगे अच्छी रीति पुरुषार्थ कर ऊंच पद पाओ। फिर से चढ़ना शुरू करना चाहिए। बाप कहते हैं गिरे हो फिर चढ़ो। ऐसे बहुत हैं, गिरते हैं तो फिर चढ़ने की कोशिश करते हैं। बाबा मना थोड़ेही करेंगे। बाप जानते हैं ऐसे भी बहुत आयेंगे। बाप कहेंगे पुरुषार्थ करो। फिर भी कुछ न कुछ मददगार तो बन जायेंगे ना। ड्रामा प्लैन अनुसार ही कहेंगे। बाप कहेंगे - अच्छा बच्चे, अब तृप्त हुए, बहुत गोते खाये अब फिर से पुरुषार्थ करो। बेहद का बाप तो ऐसे कहेंगे ना। बाबा के पास कितने आते हैं मिलने। कहता हूँ बेहद के बाप का कहना नहीं मानेंगे, पवित्र नहीं बनेंगे! बाप आत्मा समझ आत्मा को कहते हैं तो तीर जरूर लगेगा। समझो स्त्री को तीर लग जाता

like a phoenix

रहमदिल मेरा बाबा

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

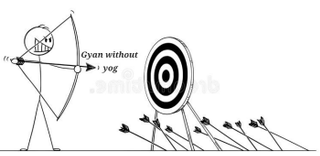

है तो कहेंगे हम तो प्रतिज्ञा करते हैं। पुरुष को नहीं लगता है। फिर आगे चल उनको भी चढ़ाने की कोशिश करेंगे। फिर ऐसे भी बहुत आते हैं, जिनको स्त्री ज्ञान में ले आती है। तो कहते हैं स्त्री हमारा गुरू है। वह ब्राह्मण लोग हथियाला बांधने समय कहते हैं यह तुम्हारा गुरू ईश्वर है। यहाँ बाप कहते हैं तुम्हारा एक ही बाप सब कुछ है। मेरा तो एक दूसरा न कोई। सब उनको ही याद करते हैं। उस एक से ही योग लगाना है। यह देह भी मेरी नहीं। अच्छा!

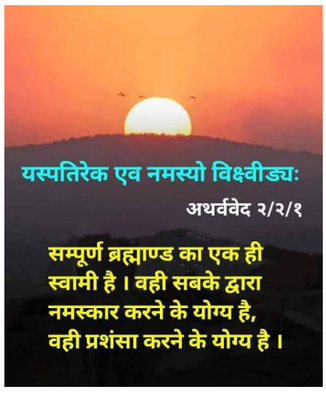

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमॉर्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

मेरे मीठे ते मीठे बाबा...

Points: ज्ञान

19-12-2025 प्रात:मुरली ओम् शा

धारणा के लिए मुख्य सार:-

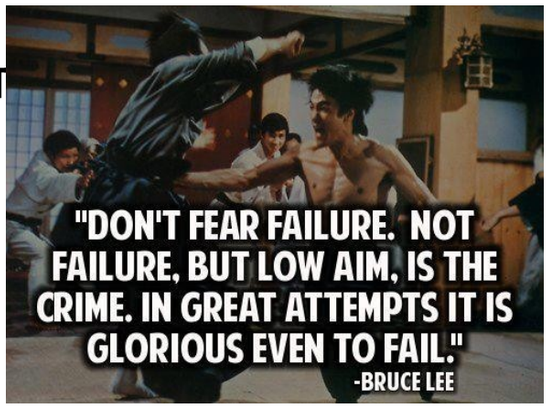

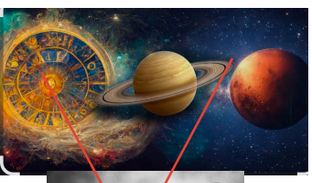

1) कोई भी ग्रहचारी आती है तो दिलशिकस्त हो बैठ नहीं जाना है। m.m.m....imp. फिर से पुरुषार्थ कर, बाप की याद में रह ऊंच पद पाना है।

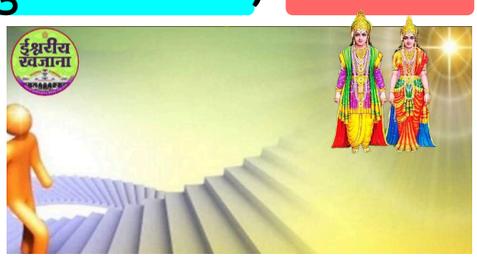

2) स्वयं की स्थिति याद से ऐसी मजबूत बनानी है जो कोई भी माया का तूफान वार न कर सके। विकारों से अपनी सम्भाल करते रहना है।

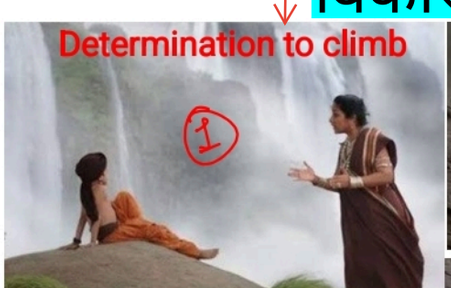

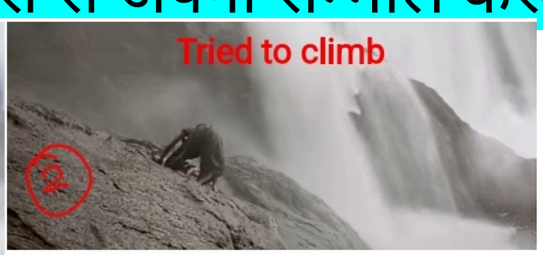

"Don't fear failure. — Not failure, but low aim, is the crime. In great attempts it is glorious even to fail."
— Bruce Lee

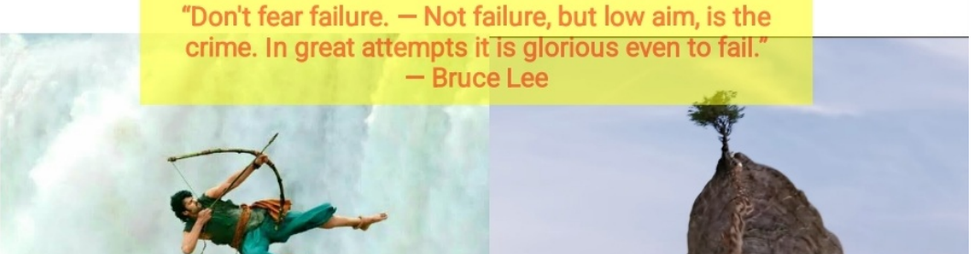

"लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आख़िर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जा कर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जय कार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।"

सेवा M.imp.

वरदान:- सर्व शक्तियों की लाइट द्वारा आत्माओं को रास्ता दिखाने वाले चैतन्य लाइट हाउस भव

यदि सदा इस स्मृति में रहो कि "मैं आत्मा विश्व कल्याण की सेवा के लिए परमधाम से अवतरित हुई हूँ" तो जो भी संकल्प करेंगे, बोल बोलेंगे उसमें विश्व कल्याण समाया हुआ होगा। और यही स्मृति लाइट हाउस का कार्य करेगी।

जैसे उस लाइट हाउस से एक रंग की लाइट निकलती है

ऐसे आप चैतन्य लाइट हाउस द्वारा सर्व शक्तियों की लाइट आत्माओं को हर कदम में रास्ता दिखाने का कार्य करती रहेगी।

स्लोगन:- स्नेह और सहयोग के साथ शक्ति रूप बनो तो राजधानी में नम्बर आगे मिल जायेगा।

अव्यक्त इशारे -

अब सम्पन्न वा कर्मातीत बनने की धुन लगाओ

जैसे कर्म में आना स्वाभाविक हो गया है वैसे कर्मातीत होना भी स्वाभाविक हो जाए।

कर्म भी करो और याद में भी रहो।

जो सदा कर्मयोगी की स्टेज पर रहते हैं, वह सहज ही कर्मातीत हो सकते हैं।

जब चाहे कर्म में आयें और जब चाहें न्यारे बन जायें, यह प्रैक्टिस कर्म के बीच-बीच में करते रहो।

गुलबकावली
(जानपद कथा)

गुलबकावली एक काल्पनिक, विशेष स्वर्णिम पुष्प है जो कि पूर्णिमा के दिन देवलोक की स्वर्णिम झील में पूर्णतया खिलता है। यह बहुत ही सुन्दर और सुगन्धित होता है। इन्द्रदेव की पुत्री, बकावली के पुष्पों से जगदम्बा को अलंकृत करती हैं। इस पुष्प की विशेषता यह है कि अन्धे व्यक्ति की आँख को इसे लगाने से उसे पुन: दृष्टि प्राप्त हो जाती है। मनुष्य लोक में एक बार शिव-भक्त राजा प्रचण्ड के पुत्र ने देवलोक से यह पुष्प लाकर अपने पिता की आँखों पर रखा तो उन्हें खोई हुई दृष्टि पुन: प्राप्त हो गयी।

अवन्तीनगर का राजा प्रचण्ड और महारानी प्रतिदिन शिव भगवान का अभिषेक कर राज्य संचालन करते थे। उनके राज्य में प्रजा सुखी थी। कई वर्षों तक सन्तान न होने के कारण राजा ने रूपवती नामक कन्या से पुन: विवाह किया जिससे तीन पुत्रों का जन्म हुआ। ये तीनों पुत्र मूर्ख और बुद्धिहीन थे। प्रथम रानी सन्तान प्राप्ति के लिए शिव आराधना में ही व्यस्त रहने लगी। कुछ दिनों पश्चात् उसने एक पुत्र को जन्म दिया जिसका नाम विजय रखा गया।

द्वितीय रानी को ईर्ष्या होने लगी क्योंकि प्रथम रानी के पुत्र विजय के कारण उसके लड़कों को राज्य-अधिकार प्राप्ति की सम्भावना नहीं थी। इसलिए द्वितीय रानी ने अपने भाई वक्रकेतु के साथ मिलकर एक योजना बनाई। उसने ज्योतिषियों के द्वारा राजा को बहकाया कि विजय को राज्य से बाहर छोड़ दिया जाये। यदि नहीं छोड़ा गया तो उसके रहने से राजा नेत्रहीन हो जायेंगे। ज्योतिषियों के आदेश को मानकर राजा ने सिपाहियों को आदेश दिया कि विजय को न केवल जंगल में छोड़कर आयें बल्कि उसे खत्म कर दें। सिपाहियों ने जंगल में विजय को मारने के लिए तलवार निकाली तो तलवार पुष्पहार बन गयी। पैरों से

कुचलकर मारना चाहा तो पैर शक्तिहीन हो गये। अन्त में शिव जी ने एक मुनि के रूप में आकर विजय को एक गड़रिये के हाथ सौंप दिया व उसकी पालना करने का आदेश दिया। दिन-प्रतिदिन विजय बुद्धिमान एवं चतुर होने लगा एवं सर्व विद्याओं में निपुण हो गया।

उधर राजभवन में वक्रकेतू ने योजना बनाई कि किसी भी तरह राजा को अन्धा बनाकर स्वयं राज्य करे। इस योजना को क्रियान्वित करने के लिए उसने राजा को, शिकार करने के लिए जंगल जाते समय दूध में एक तरह की दवा मिलाकर पिला दी। धीरे-धीरे राजा की दृष्टि कम होती गई और ठीक उसी समय जब वह पूरा अन्धा होने वाला था, उसको सामने विजय दिखाई दिया। इसके तुरन्त बाद ही राजा अन्धा हो गया। राजा ने विजय को पहचान लिया कि यही उसका बेटा है। विजय को भी माँ द्वारा सम्पूर्ण रहस्य मालूम हुआ।

एक बार विजय अपने माता-पिता से मिलने जब छिपकर महल में पहुँचा तो वहीं उसे मालूम हुआ कि देवलोक से गुलबकावली पुष्प लाकर पिता की आँखों पर रखने से उन्हें पुन: दृष्टि प्राप्त हो सकती है। विजय ने गुलबकावली पुष्प लाने के लिए प्रस्थान किया।

रास्ते में एक शहर में युक्तिमति नामक एक युवती रहती थी। वो बहुत लोगों को जुए के खेल में हराकर अपने पास बन्दी बनाकर रखती थी। शर्त यह थी कि जो उसे हरायेगा युक्तिमति उसी से शादी करेगी। वास्तव में वह अपनी युक्ति से ही खेल में जीत पाती थी। इस खेल के बीच में एक बिल्ली के सिर पर दीपक रख उसके आगे चूहा छोड़ा जाता था जिसे पकड़ने के प्रयास में बिल्ली दौड़ती थी तो दीपक नीचे गिर जाता था एवं अंधेरा हो जाता था। अंधेरे में वह युवती खेल को अपने पक्ष में कर सभी को हराती थी। विजय ने युक्तिमति की यह युक्ति पहचानकर उससे खेलने के लिए एक बूढ़े व्यक्ति के वेष में जाकर उसे हरा दिया और शर्त के अनुसार उससे विवाह कर लिया।

विजय, गुलबकावली का फूल लाने के लिए पूर्णिमा के दिन देवलोक पहुँचा। वहाँ स्वर्णिम झील में खिले हुए गुलबकावली के पुष्प उसे दिखाई दिये। उन पुष्पों को मनुष्य लोक तक लाने हेतु विजय को अनेक विघ्नों का सामना करना पड़ा। अन्त में विजय ने पुष्प को पिता की आँखों पर रख उन्हें पुन: दृष्टि प्राप्त करायी एवं राजद्रोही वक्रकेतु का संहार किया। विजय का युवराज के रूप में राज्य दरबार में अभिषेक हुआ।

आध्यात्मिक भाव – जैसे अन्धे व्यक्ति को गुलबकावली पुष्प द्वारा दृष्टि प्राप्त होने का प्रसंग कहानी में स्पष्ट किया गया है वैसे ही वर्तमान समय चारों ओर व्याप्त अज्ञान अंधकार एवं विकारों के वशीभूत हुए ज्ञान नेत्रहीन मानव को पुन: शिव बाबा परमधाम से आकर ज्ञान प्रकाश रूपी पुष्पों द्वारा ज्ञान का तीसरा नेत्र प्रदान कर रहे हैं। जैसे राजकुमार को गुलबकावली पुष्प लाने के लिए अनेक विघ्नों का सामना करना पड़ा वैसे ही आत्मायें जब ज्ञानमार्ग पर चलती हैं तो पांच विकारों रूपी माया बिल्ली अनेक प्रकार के विघ्न डालती है तथा सम्पूर्ण ज्ञानी और योगी बनने नहीं देती परन्तु निर्भयतापूर्वक विघ्नों का सामना कर एक शिव बाबा पर दृढ़ निश्चय रख आगे बढ़ने वाले स्वत:ही ज्ञान नेत्र प्राप्त कर अन्य आत्माओं को भी नेत्र प्रदान कराते हैं। उपर्युक्त कहानी में जैसा कि कहा गया है कि खेल के बीच में बिल्ली के हस्तक्षेप के कारण कई व्यक्ति हार गये वैसे ही ज्ञानमार्ग में माया रूपी बिल्ली भी आत्मा की ज्योति बुझाकर निर्णय-शक्ति को समाप्त कर देती है। माया के प्रभाव को समझकर विजयी बनने वाले ही बुद्धिवान, ज्ञानी और योगी आत्मायें हैं। जैसे राजकुमार ने राजद्रोही का संहार कर युवराज पद प्राप्त किया वैसे ही हमें भी शिवशक्ति बन माया का संहार कर शिव बाबा से स्वर्ग के राज्य का अधिकार लेना है।

बापदादा बच्चों का सदा आगे बढ़ने का उमंग उत्साह देखते हैं। बच्चों का उमंग बापदादा के पास पहुँचता है। बच्चों के अन्दर है कि विश्व के वी.वी.आई.पी. बाप के सामने ले जाऊँ - यह उमंग भी साकार में आता जायेगा। क्योंकि नि:स्वार्थ सेवा का फल ज़रूर मिलता है। सेवा ही स्व की स्टेज बना देती है। इसलिए यह कभी नहीं सोचना कि सर्विस इतनी बड़ी है मेरी स्टेज तो ऐसी है नहीं। लेकिन सर्विस आपकी स्टेज बना देगी। दूसरों की सर्विस ही स्व उन्नति का साधन है। सर्विस आपेही शक्तिशाली अवस्था बनाती रहेगी। बाप की मदद मिलती है ना। बाप की मदद मिलते-मिलते वह शक्ति बढ़ते-बढ़ते वह स्टेज भी हो जायेगी। समझा! इसलिए यह कभी नहीं सोचो कि इतनी सर्विस मैं कैसे करूँगा-करूँगी, मेरी स्टेज ऐसी है। नहीं। करते चलो। बापदादा का वरदान है - आगे बढ़ना ही है। सेवा का मीठा बंधन भी आगे बढ़ने का साधन है। जो दिल से और अनुभव की अथार्टी से बोलते हैं उनका आवाज दिल तक पहुँचता है। अनुभव की अथार्टी के बोल औरों को अनुभव करने की प्रेरणा देते हैं। सेवा में आगे बढ़ते-बढते जो पेपर आते हैं वह भी आगे बढ़ाने का ही साधन हैं। क्योंकि बुद्धि चलती है, याद में रहने का विशेष अटेन्शन रहता है। तो यह भी विशेष लिफ्ट बन जाती है। बुद्धि में सदा रहता कि हम वातावरण को कैसे शक्तिशाली बनायें। कैसा भी बड़ा रूप लेकर

विघ्न आए लेकिन आप श्रेष्ठ आत्माओं का उसमें फायदा ही है। वह बड़ा रूप भी याद की शक्ति से छोटा हो जाता है। वह जैसे कागज का शेर।

(27.02.1985)

9.5 दिनचर्या पर ध्यान और पूर्व तैयारी :

अमृतवेले की स्मृति का स्वरूप, गॉडली स्टडी करने की स्मृति का स्मृति-स्वरूप, कर्म करते हुए कर्मयोगी रहने के स्मृति-स्वरूप, ट्रस्टी बन अपने शरीर निर्वाह के व्यवहार के समय का स्मृति-स्वरूप, अनेक विकारी आत्माओं के सम्पर्क में आने का स्मृति स्वरूप, वायब्रेशन्स वाली आत्माओं का वायब्रेशन परिवर्तन करने का कार्य करते समय का स्मृति-स्वरूप — सब डायरेक्शन मिले हुए हैं। याद हैं? जैसे भविष्य में जैसा समय होगा वैसी ड्रेस चेन्ज करेंगे। हर समय के कार्य की ड्रेस और शृंगार अपना-अपना होगा। तो यह अभ्यास यहाँ धारण करने से भविष्य में प्रालब्ध-रूप में प्राप्त होंगे। वहाँ स्थूल ड्रेस चेन्ज करेंगे और यहाँ जैसा समय, जैसे कार्य वैसा स्मृति-स्वरूप हो। अभ्यास है वा भूल जाता है? इस समय के आपके अभ्यास का यादगार भक्तिमार्ग में भी जो विशेष नामीग्रामी मन्दिर हैं, वहाँ भी समय प्रमाण ड्रेस बदली करते हैं। हर दर्शन की ड्रेस अपनी-अपनी बनी हुई होती है। तो यह यादगार भी किन आत्माओं का है? जो आत्मायें इस संगमयुग पर जैसा समय, वैसा स्वरूप बनने के अभ्यासी हैं।

बापदादा बच्चों के सारे दिन की दिनचर्या को चेक करते हैं। रिजल्ट में समय प्रमाण 'स्मृति-स्वरूप' का अभ्यास कम दिखायी देता है। स्मृति में है, लेकिन स्वरूप में नहीं आता है। समझा?

समय होगा अमृतवेले का, जिस समय विशेष बच्चों के प्रति सर्वशक्तियों के वरदान का, सर्व अनुभवों के वरदान का, बाप समान शक्तिशाली लाइट हाउस, माइट हाउस स्वरूप में स्थित होने का, मेहनत कम और प्राप्ति अधिक होने का गोल्डन समय है। उस समय भी जो मास्टर बीज-रूप, वरदानी-स्वरूप की स्मृति होनी चाहिए उसके बजाय, समर्थी स्वरूप के बजाय, बाप समान स्थिति का अनुभव करने के बजाय कौन-सा स्वरूप धारण करते हैं? मैजारिटी उलहने देते या शिकायत करते हैं या दिलशिकस्त स्वरूप होकर बैठते। वरदानी, विश्व-कल्याणी स्वरूप के बजाय स्वयं के प्रति वरदान माँगने वाले बन जाते हैं या अपनी व दूसरों की

What we have to be...

What we are doing

18/12/25

शिकायतें करेंगे। तो जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप न होने से समर्थी स्वरूप भी नहीं बन पाते। इसी प्रकार से सारे दिन की दिनचर्या में, जैसा सुनाया कि समय प्रमाण स्वरूप धारण न करने के कारण, सफलता नहीं हो पाती, प्राप्ति नहीं हो पाती। फिर कहते हैं खुशी क्यों नहीं होती? इसका कारण क्या हुआ? मन्त्र और यन्त्र को भूल जाते हैं। पहले चैक करो कि जैसा समय वैसा स्वरूप रहा? अगर नहीं, तो फौरन अपने को चेक करने के बाद चेन्ज करो। कर्म करने से पहले स्मृति-स्वरूप को चेक करो, कर्म करने के बाद नहीं करो। **कहीं भी कोई कार्य-अर्थ जाना होता है, तो जाने के पहले तैयारी करनी होती है, न कि बाद में। ऐसे हर काम के पहले स्थिति में स्थित होने की तैयारी करो।** करने के बाद सोचने से कर्म की प्राप्ति के बजाय पश्चाताप हो जाता है। तो द्वापर से प्राप्ति की बजाय प्रार्थना और पश्चाताप किया, लेकिन अब प्राप्ति का समय है, तो प्राप्ति का आधार हुआ — जैसा समय वैसा स्मृति-स्वरूप।

समझा?

m.m.m....imp.

Mind very well...